रिकॉर्ड :– भोलेनाथ से निराला.... देहली ॐ पिताश्री 5/2/63
ओम् शान्ति। यह गीत है पारलौकिक परमपिता प० शिवबाबा की महिमा में। शिवबाबा अपनी महिमा सुना (रहे) हैं बच्चों द्वारा। बच्चे जानते हैं, बरोबर आदि–मध्य–अंत का राज़ और कर्म–अकर्म–विकर्म की गति का राज़ (बोल) रहे हैं और बच्चे ही अपने पारलौकिक बाप और उनके घर को जानते हैं। सभी आत्माएँ अभी सन्मुख हैं। बाप बच्चों (को आए) अपना परिचय दे रहे हैं– बच्चे, मैं तुम सभी का बाप हूँ। सदैव परमधाम में रहने वाला हूँ। जब तुम बच्चे अपना ऑलराउण्ड पार्ट 84 जन्मों का पूरा करते हो तो फिर 84 जन्मों के आदि–मध्य–अंत का राज़ तुमको बतलाते हैं कि कैसे माया विकर्म कराए पतित बनाती है, फिर मैं आकर पावन बनाता हूँ। अभी तुम शिव की जयन्ती मनाते हो। शिवबाबा जानते हैं कि बच्चे मेरी जयंती मनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं, प्लैन मना रहे हैं। यह तो बच्चे जानते हैं, एक जन्मदिन भी मनाते हैं और फिर वर्षी भी मनाते आते हैं। ब्राह्मण खिलाते आते हैं, साल ब साल साल्यानी(सालियाना) भी मनाते हैं। फिर 100 बरस की भी मनाते हैं; जैसे बुद्ध की 100 बरस की मनाते हैं। कृष्ण की फिर 4963 (की) जयंती मनाते हैं। अभी शिवबाबा की तुम क्या मनावेंगे? उनकी जयंती मनावेंगे। अपने पीछे तो कोई भी जयंती वा एनिवर्सिरी मनाने वाला रहेगा नहीं। विनाश शुरू होगा फिर जन्मदिन वा वर्षी नहीं मनावेंगे। बाबा की तुम सिर्फ जयंती मनाते हो। शिव कब आया, फिर कब वापिस गया। ऐसे तो नहीं कहेंगे, कब मरा? जयंती तो है। एनिवर्सिरी(वर्षी) नहीं कहेंगे। देहांत हुआ, ऐसे नहीं कहेंगे। कहेंगे, बाबा चला गया परमधाम। बच्चे कहेंगे, हम भी बाबा के पिछाड़ी जाने वाले हैं। अभी जयंती जिसकी मनाई जाती है उनकी महिमा करते हैं। विवेकानंद की जयंती मनावेंगे तो उनके जीवन की महिमा गावेंगे। गाँधी की भी महिमा करते हैं। तुम बच्चे जानते हो, वास्तव में एक शिवबाबा के सिवाय और कोई की महिमा है नहीं। जयंती वास्तव में एक की ही मनानी चाहिए। वो ही मु(ख्य) है सभी का बाबा। और कोई की महिमा है नहीं। शिव जयंती वा शिव रात्रि मनाते हैं। रात्रि को आया है, रीइनकारनेट हुआ है। कृष्ण की तो बात ही नहीं। यह है कल्प की अंत और आदि, दिन और रात की बात। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात के संगमयुग की है शिव जयंती। उस दिन–रात की बात नहीं है। यह है बेहद की दिन और रात। वास्तव में, शिव की जयंती तो अमृतवेले मनानी चाहिए; क्योंकि अमृतवेले का वो शुद्ध समय है। अमृतवेले ही अमृत की वर्षा करते हैं। तो उनकी ही महिमा करनी पड़े। उन जैसी महिमा और कोई मनुष्य मात्र अथवा देवताओं की भी हो नहीं सकती। परमपिता प० इस ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। अगर शिवबाबा न हो तो ब्रह्मा स्थापना क्या करेगा! शिवबाबा नहीं तो गोया ब्रह्मा नहीं। अगर शंकर का भी उठावें तो शिवबाबा तो शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। शिव नहीं हो तो विनाश थोड़े ही करावे। तो महिमा सारी शिवबाबा की हुई ना। शंकर क्या करते हैं? उनकी क्या महिमा है? ब्रह्मा की, शंकर की अथवा विष्णु और उनके दो रूप ल०ना० की क्या महिमा है? कुछ भी नहीं। उन्हों को बाप से वर्सा मिला। जिनको वर्सा दिया, उन बच्चों की क्या महिमा है? कुछ भी नहीं। बाप ने अथाह सुख का वर्सा दिया है खास भारत को। फिर ल०ना० की जयंती क्या काम की! अगर उनको बाप से वर्सा न मिलता तो जयंती क्या काम की! वो तो प्रालब्ध भोग रहे हैं। बहादुरी क्या की? किसको कुछ बनाया क्या? कोई कहे, गाँधी ने कुछ किया। क्या किया? करके युक्ति से ब्रिटिश गवर्मेन्ट से छुड़ाया। फिर क्या नई देहली बनी? यह नई देहली तो वो बनाकर गए हैं। उन्होंने अपने रहने लिए बनाई थी; परन्तु गाँधी ने हड़ताल आदि कर युक्ति से निकाला। यह भी ड्रामा अनुसार

होता है। कल्प–2 ऐसे होगा। कोई नई बात नहीं। न्यू देहली का फाउंडेशन तो उन्होंने डाला है। उसको करके थोड़ा वृद्धि में लाया है। फाउंडेशन उन्हों का है। गाँधी तो माँगते थे, नई दुनिया में, नया भारत में फिर नई देहली परिस्तान हो। यह तो पुराने शहर में जैसे कोई नई कॉलोनी बनावे, ऐसे बनाई है। वास्तव में महिमा कोई ल०ना० की नहीं गाई जास्ती। महिमा है तो एक की। जगदम्बा का मेला बड़ा लगता है। अच्छा, जगदम्बा और फिर जगत पिता। उनको कहा जाता प्रजापिता ब्रह्मा। वो तो प्रजापिता ब्राह्मणों का होगा ना। अभी इतनी प्रजा, ह्यूमिनिटी कैसे पैदा हुई? बच्चे जानते हैं कि यह है ब्रह्मा की मुखवंशावली। प्रजा कितनी बनती जावेगी। बहुत बनेगी। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पढ़ाई पढ़ते हैं देवी–देवता पद पाने। इनमें भी सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजाएँ, प्रजा, दास–दासियाँ सभी बनेंगे। इसको कहा जाता है किंगडम। ब्राह्मणों की वा पाण्डवों की किंगडम नहीं है। पाण्डव भी प्रजा, कौरव भी प्रजा है; परन्तु उनको राज्य है। पाण्डवों को राज्य कहाँ है! तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते। फिर सारी राजाई मिलनी है। तो पहले–2 मु(ख्य) है शिवबाबा की महिमा। परमपिता प० निराकार सत् है, चैतन है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, आनंद का सागर, ज्ञान का सागर..... है। परमपिता, परमशिक्षक, परम सत्गुरु भी है। उनकी बहुत महिमा लिखनी है। शिव जयंती पर सारी उसकी महिमा करनी है। और तो कोई उसकी महिमा कर न सकते। वो सर्व का परमपिता है, सर्वो शिक्षक है, सर्वो सत्गुरु है। उनकी महिमा करने में ही 3–4 दिन चाहिए। वो ज्ञान का सागर है, जिस ज्ञान सागर से ज्ञान गंगाएँ निकलीं, जो ज्ञान से पतित सृष्टि को पावन बना रहे हैं। तुम 27 शिव जयंती मनाते हो। अभी वो क्या कर रहे है सो तुम प्रैक्टिकल समझावेंगे। सारी महिमा ही महिमा करनी है। और कोई मनुष्य उनकी महिमा को नहीं जानते। शिव की महिमा ही नहीं जानते तो शिव जयंती की महिमा क्या करेंगे! करके सिर्फ हॉली डे करते हैं। और कुछ करते हैं (पूजा) अच्छा, सारी रात शिव की पूजा करते हैं, महिमा तो नहीं करते। महिमा बिगर पूजा क्या काम की। अभी तुम उनकी प्रैक्टिकल महिमा गावेंगे। फिर कहेंगे, भक्तिमार्ग में उनकी ऐसी पूजा होती है। हमारा, तुम्हारा, सभी का वो बाप है। शिवबाबा राय भी देते हैं– शिव की महिमा सिर्फ तुम बच्चे ही कर सकते हो; क्योंकि तुम जानते हो जयंती माना ही उनकी महिमा करना। ज्ञान का सागर है तब तो गीता का ज्ञान देते हैं। ज्ञान गंगाओं द्वारा भारत इनपर्टीक्युलर, सृष्टि इनजनरल सभी को पावन बनाते हैं। बाकी कृष्ण वा राम कोई पतित–पावन नहीं। तो गीता भी रॉंग हो जाती। फिर और जो सलोगन गाते हैं पतित–पावन..... वो भी रॉंग हो जाता। अभी बाबा हमारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खोल रहे हैं। माया पर जीत पाने युद्ध करा रहे हैं। कौरवों की युद्ध यवनों से हुई और पाण्डवों की युद्ध माया से हुई। इनको योगबल कहा जाता। हरेक बात समझानी पड़े। पहले–2 शिवबाबा की पूरी महिमा करनी है। वो सुख का सागर है, हमको सतयुग में सुख का सागर बनाते हैं। महिमा है तो उनकी। कृष्ण की जयंती मनाने से क्या होता है? कुछ भी नहीं। और ही उनकी निंदा करते हैं। कितनी बदनामी कर दी है! तो सारी महिमा बाप की बतलानी है, जि(ससे) सभी सिद्ध हो जाय कि बाकी सभी शास्त्र वर्थ नॉट ए पैनी है। एक ही गीता है जो पतितों को पावन बनाते(ती) हैं। और शास्त्र तो पढ़ते मनुष्य बहुत पतित हो जाते हैं। तो शिवबाबा की महिमा करो। फिर उसने क्या–2 दिया, वो वर्णन करना है। महिमा ही महिमा करो, तो और सभी की महिमा उड़ जावे। विवेकानंद की जयंती मनाते हैं। अच्छा, वो कहाँ गया? उनको तो पुनर्जन्म

(अधूरी मुरली)